UNIVERSAL LIBRARY

OU_176328

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. 181.4/A81U Accession No. H733

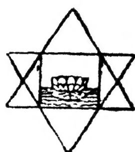
Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

उत्तरपाड़ा आमभाषण

श्रीअरविंद



श्रीअरविंद-ग्रंथमाला
१६, रयू देबासैं द रिश्मों
16 RUE DESBASSIN DE RICHEMONT
पांडीचेरी PONDICHERRY·

अनुवादक—श्रीमदनगोपाल गाड़ोदिया

प्रकाशक

श्रीअरविंद-ग्रंथमाला

१६, रयू देबासैं द रिश्मों

16 Rue Desbassin De Richemont

पांडीचेरी

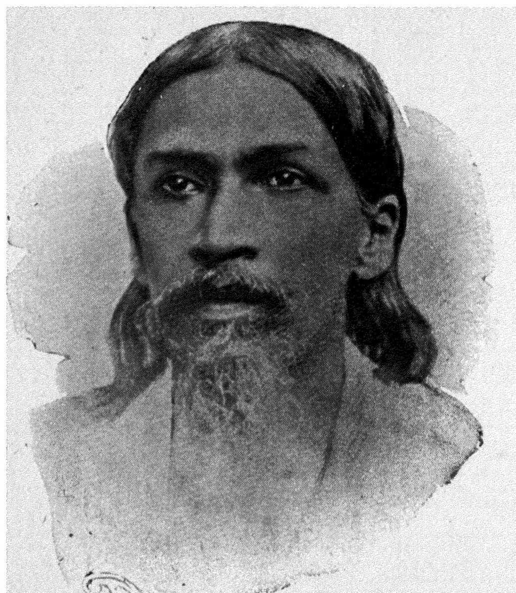
२४ नवंबर १९४२

मुद्रक

हिन्दी प्रचार प्रेस, मद्रास

प्रथम संस्करण
१०००

मूल्य
।) चार आना



Sri Aurobindo

उत्तरपाड़ा अभिभाषण

जब मुझे आपकी सभाके इस वार्षिक अधिवेशनपर वक्तृता देनेके लिये कहा गया, उस समय मेरी यह इच्छा थी कि आजके लिये जो विषय निर्वाचित हुआ है उसी विषयपर, अर्थात् हिंदूधर्म-पर मैं कुछ कहूंगा। मैं नहीं जानता कि उस इच्छाको मैं पूरी कर सकूंगा या नहीं; क्योंकि जैसे ही मैं यहां आकर बैठा वैसे ही मेरे मनमें एक वाणी आयी और इस वाणीको मुझे आपको, सारी भारत-जातिको सुनाना है। यह वाणी मुझे पहले-पहल जेलमें सुनायी दी थी, जिसे अपने देशवासियोंको सुनानेके लिये मैं जेलसे बाहर आया हूं।

गत बार जब मैं यहां आया था उसे एक वर्षसे ऊपर हो चुका है। उस बार जब मैं आया था तब मैं अकेला ही नहीं था; तब मेरी बगलमें बैठे हुए थे राष्ट्रीयताके एक परम शक्तिमान् दूत। उस समय वे उस एकांतवाससे लौटकर आये थे जहां वे इसलिये भेजे गये थे कि वे अपनी कालकोठरीकी निस्तब्धता और निर्जनतामें उस वाणीको सुन सकें जिसे उन्हें सुनाना है। उस समय आप हजारोंकी संख्यामें उन्हींका स्वागत करने आये थे। आज वे हमसे बहुत दूर हैं, वे हमसे हजारों मील दूर हो गये हैं। दूसरे-दूसरे लोग भी, जिन्हें मैं अपने साथ काम करते हुए पाता था, आज अनुपस्थित हैं। देशव्यापी जो तूफान आया उसने उन्हें दूर-दूरमें बिखेर दिया है। अबकी बार मैंने एक वर्षका समय निर्जनवासमें बिताया है, और अब बाहर आकर देखता हूँ कि सब कुछ बदल गया है। मेरे एक साथी जो सदा मेरी बगलमें बैठते थे, जो सदा

मेरे काममें सहयोग दिया करते थे, आज बर्मामें कैद हैं, दूसरे सहयोगी उत्तर प्रदेशमें नजरबंद होकर सड़ रहे हैं। जब मैं बाहर आया तो मैंने अपने चारों ओर देखा, जिनसे मैं मंत्रणा और प्रेरणा पानेका अभ्यस्त था उन्हें खोजा। वे मुझे नहीं मिले। केवल इतना ही नहीं, बल्कि इससे भी अधिक कुछ हो गया है। जब मैं जेल गया था तब सारा देश बंदेमातरम्‌की ध्वनिसे गूंज रहा था, उसमें एक राष्ट्र बननेकी आशा संजीवित थी, यह उन करोड़ों मनुष्योंकी आशा थी जो गिरी हुई दशासे अभी-अभी ऊपर उठे थे। जब मैं जेलसे बाहर आया तो मैंने इस ध्वनिको सुननेके लिये अपने कान खड़े किये, किंतु इसके बदले देशमें एक निस्तब्धता छायी हुई दिखायी दी। देशमें निश्चेष्टता छा गयी थी और लोग हक्के-बक्केसे दिखायी दिये; क्योंकि हमारे सामने भविष्यकी कल्पनासे पूर्ण ईश्वरका जो उज्ज्वल स्वर्ग था उसके बदले हमारे सिरपर एक मेघावृत आकाश दिखायी दिया जहांसे मानव वज्र और विद्युत्‌की वर्षा हो रही थी। किसीको यह दिखायी नहीं देता था कि किस ओर चलना चाहिये और चारों ओरसे यही प्रश्न उठता था कि "अब हम क्या करें? हम क्या कर सकते हैं?" मुझे भी यह पता नहीं चला कि अब किधर चलना चाहिये, अब क्या करना चाहिये। पर मैं एक बात जानता था कि ईश्वरकी जिस महती शक्तिने उस ध्वनिको जगाया था, उस आशाका संचार किया था उसी शक्तिने इस निस्तब्धताको भेजा है। जो ईश्वर उस कोलाहल और आंदोलनमें थे, वे ही इस विश्राम और निस्तब्धतामें हैं। ईश्वरने इसको इसलिये भेजा है कि राष्ट्र क्षणभरके लिये आत्म-संवरण करे और अपने अंदर अनुसंधान करे और जाने कि उनकी इच्छा क्या है। इस निस्तब्धतासे मैं निरुत्साहित नहीं हुआ हूँ, क्योंकि कारागारमें निस्तब्धताके साथ मेरी घनिष्ठता हो

चुकी है और मेरी नजरकैदके एक वर्ष जितने इस लंबे कालमें, इस उपर्युक्त शिक्षाको स्वयं मैंने भी विश्राम और निस्तब्धताके द्वारा ही लाभ किया है। जब विपिनचंद्र पाल जेलसे छूटकर आये थे तो वे एक संदेश लेकर आये थे और वह एक अनुप्रेरित संदेश था। उन्होंने जो वक्तृता यहां दी थी वह मुझे याद है। उस वक्तृताका मर्म और अभिप्राय जितना राजनीतिक नहीं था उतना धार्मिक था। उन्होंने उस समय जेलके अंदर अपने साक्षात्कारकी, हम सबके अंदर जो भगवान् हैं, राष्ट्रके अंदर जो ईश्वर हैं उनकी बात कही थी। और अपने बादके व्याख्यानोंमें उन्होंने यह कहा था कि इस आंदोलनमें जो शक्ति काम कर रही है वह सामान्य शक्तिकी अपेक्षा महत्तर है और इसका जो हेतु है वह भी साधारण हेतुसे कुछ बड़ा है। अस्तु! आज मैं भी आपसे पुनः मिल रहा हूं, मैं भी जेलसे बाहर आ गया हूं और आप ही, इस उत्तरपाड़ाके अधिवासी ही मेरा सबसे पहला स्वागत कर रहे हैं, किसी राजनीतिक सभामें नहीं, बल्कि उस समितिकी सभामें जिसका उद्देश्य है धर्मका संरक्षण। जिस संदेशको विपिनचंद्र पालने भगवान्से बक्सर जेलमें प्राप्त किया था उसे भगवान्ने मुझे अलीपुरमें दिया है। मेरे बारह महीनेके कारावासमें भगवान्ने उस संदेशके ज्ञानको ही दिन-पर-दिन बढ़ाया है और यह आदेश दिया है कि मैं जेलसे बाहर आकर आपको उसे सुना दूं।

मैं जानता था कि मैं जेलके बाहर निकलूंगा। यह वर्षभरका अवरोध केवल एक वर्षके एकांतवास और साधनाके लिये था। क्या किसीके लिये यह संभव था कि वह मुझे जेलमें उतने दिनोंसे अधिक रोक रखे जितने कि भगवान्के हेतुको सिद्ध करनेके लिये आवश्यक थे? उन्होंने मुझे कहनेके लिये एक वाणी दी है और करनेके लिये एक काम, और मैं यह जानता था कि जबतक वह

वाणी सुना नहीं दी जाती तबतक कोई मानव-शक्ति मुझे चुप नहीं कर सकती, जबतक वह काम नहीं हो लेता तबतक कोई मानव-शक्ति ईश्वरके उपकरणको नहीं अटका सकती, फिर वह उपकरण कितना ही दुर्बल, कितना ही क्षुद्र क्यों न हो। अब जब कि मैं बाहर आ गया हूं, इन चंद मिनटोंके अंदर ही मुझे एक ऐसी वाणी सुझायी गयी है जिसे कहनेकी मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मेरे मनमें जो कुछ था उसे भगवान्‌ने निकालकर फेंक दिया है और मैं जो कुछ बोल रहा हूं वह एक प्रेरणाके वशीभूत होकर, बाध्य होकर ही बोल रहा हूं।

मैं जब गिरफ्तार किया गया और जल्दी-जल्दी लालबजार-की हाजतमें पहुंचाया गया था तब मेरी श्रद्धा क्षणभरके लिये डिग गयी थी, क्योंकि उस समय मैं भगवान्‌की इच्छाके मर्मको नहीं जान पाया था। इसलिये मैं क्षणभरके लिये विचलित हो गया और भीतर-ही-भीतर भगवान्‌को पुकारकर कहा कि "यह क्या हुआ? मेरा यह विश्वास था कि मुझे अपने देशवासियोंके लिये कोई विशेष काम करना है और जबतक वह काम पूरा न हो जाय तबतक तुम मेरी रक्षा करोगे। तब फिर मैं यहां क्यों हूं और वह भी इस प्रकारके अभियोगमें अभियुक्त होकर?" एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीते, और तब मेरे अंदरसे एक आवाज आयी कि, "ठहरो और देखो कि क्या होता है"। तब मैं शांत हो गया और प्रतीक्षा करने लगा। मैं लालबजार थानेसे अलीपुर जेलमें भेजा गया और वहां मुझे एक महीनेके लिये मनुष्योंसे दूर एक निर्जन कालकोठरीमें रखा गया। वहां मैं अपने अंदरमें रहनेवाले भगवान्‌की वाणीको सुननेके लिये, वे मुझे क्या कहना चाहते हैं यह जाननेके लिये और मुझे क्या करना होगा यह समझ लेनेके लिये रात दिन ध्यान लगाये रहा। इस एकांतवासमें मुझे पहले-पहल

भगवत्साक्षात्कार हुआ, मेरी पहली शिक्षा-दीक्षा हुई। तब मुझे याद आया कि मेरी गिरफ्तारीके करीब एक महीने पहले मुझे यह आदेश मिला था कि मैं सारी कर्मण्यताओंको छोड़ दूं, एकांतवासमें चला जाऊं और अपने अंदर अनुसंधान करूं जिससे कि मैं भगवान्‌के साथ घनिष्ठतर भावसे योगयुक्त हो सकूं। मैं दुर्बल था और उस आदेशको स्वीकार न कर सका। मुझे मेरा कर्म बहुत प्यारा था और हृदयमें इस बातका अभिमान था कि यदि मैं न होऊं तो इस कामको धक्का पहुंचेगा, यहांतक कि यह असफल और बंद भी हो जा सकता है। इसलिये मुझे उसे नहीं छोड़ना चाहिये। ऐसा बोध हुआ कि वे मुझसे फिर बोले और कहा कि, "जिन बंधनोंको तोड़नेकी शक्ति तुममें नहीं थी उन्हें मैंने तुम्हारे लिये तोड़ दिया है, क्योंकि मेरी यह इच्छा नहीं है, न कभी मेरी यह इच्छा थी कि वे जारी रहें। तुम्हारे करनेके लिये मैंने दूसरा काम चुन रखा है और उसीके लिये मैं तुम्हें यहां लाया हूं और वह यह कि मैं तुम्हें वह बात सिखा दूं जिसे तुम स्वयं नहीं सीख सके और मेरे अपने कामके लिये तुम्हें सिखा-पढ़ाकर तैयार कर लूं"। इसके बाद भगवान्‌ने मेरे हाथोंमें गीता रख दी। उनकी शक्ति मुझमें प्रवेश कर गयी और मैं गीताकी साधना करनेमें समर्थ हुआ। मुझे केवल बुद्धिद्वारा ही नहीं, बल्कि अनुभूतिद्वारा यह उपलब्ध करना पड़ा कि श्रीकृष्णकी अर्जुनसे क्या मांग थी और वे उन लोगोंसे क्या मांगते हैं जो उनके कर्मको करनेकी अभिकांक्षा रखते हैं, अर्थात् जुगुप्सा और वासना-कामनासे मुक्त होना होगा, फल-की इच्छा न रखकर भगवान्‌के लिये कर्म करना होगा, अपनी इच्छाका त्याग करना होगा और निश्चेष्ट तथा सच्चा यंत्र बनकर भगवान्‌के हाथोंमें रहना होगा, ऊंच और नीच, मित्र और शत्रु, सफलता और विफलताके प्रति समदृष्टि रखनी होगी और फिर

भी उनके कर्ममें कोई अवहेलना न होगी। मैंने यह उपलब्ध किया कि हिंदूधर्मका अभिप्राय क्या है। बहुधा हम हिंदूधर्म, सनातन-धर्मकी बातें किया करते हैं, किंतु हममेंसे थोड़ेसे इने-गिने लोग ही ऐसे होंगे जो यह जानते हों कि यह धर्म क्या है। अन्यान्य धर्म मुख्यतः विश्वासपर अवलंबित हैं और उनको स्वीकार कर लेना ही यथेष्ट होता है, किंतु सनातनधर्म तो स्वयं जीवन है, इसपर केवल विश्वास कर लेनेसे ही काम नहीं चलता इसके अनुसार तो अपने जीवनको ही गढ़ना होता है। यही वह धर्म है जिसका लालन-पालन मानव-जातिके कल्याणके लिये पुराकालसे इस प्रायद्वीपके एकांतवासमें होता आ रहा है। इसी धर्मको देनेके लिये ही भारत उठ रहा है। भारतवर्ष, दूसरे देशोंकी तरह, अपने लिये ही या इसलिये नहीं उठ रहा है कि जब वह सबल हो जाय तो दुर्बलोंको पददलित करे। जो सनातन ज्योति उसे थातीके तौरपर सौंपी गयी है उसे संसारमें फैलानेके लिये ही वह उठ रहा है। भारतका अस्तित्व सदा ही मानव-जातिके लिये रहा है अपने लिये नहीं और वह जो महान् होने जा रहा है वह भी अपने लिये नहीं बल्कि मानव-जातिके लिये।

अतएव, भगवान्‌ने जो दूसरी वस्तु मुझे दिखा दी वह यह थी—उन्होंने हिंदूधर्मके सनातन सत्यका मुझे साक्षात्कार करा दिया। उन्होंने मेरे जेलरोंके दिलको मेरी ओर घुमा दिया और उन लोगोंने उस जेलके अंग्रेज पदाधिकारीसे कहा कि "ये काल-कोठरीके कारावासमें बहुत ही कष्ट पा रहे हैं; कम-से-कम इन्हें सुबह शाम आध-आध घंटा कोठरीके बाहर टहलनेकी आज्ञा दी जाय।" यह आज्ञा हो गयी और जब मैं टहल रहा था तब भगवान्‌की शक्तिने पुनः मेरे अंदर प्रवेश किया। मैंने अपनेको मनुष्योंसे अलग करनेवाले जेलकी ओर दृष्टि डाली और यह पाया

कि अब मैं उसकी ऊंची दीवारोंके अंदर बंद नहीं हूं; अब तो मुझे घेरे हुए थे वासुदेव। मेरी कालकोठरीके सामने जो पेड़ था उसकी शाखाओंके नीचे मैं टहल रहा था, पर वहां अब पेड़ नहीं था, मैंने देखा कि वहां अब वासुदेव श्रीकृष्ण खड़े हैं और मेरे ऊपर अपनी छत्रछाया किये हुए हैं। मैंने अपनी कालकोठरीके सीखचोंकी ओर देखा, उन झरोखोंकी ओर देखा जो दरवाजेका काम कर रहे थे और वहां भी वासुदेवको पाया। नारायण ही संतरी बनकर पहरा दे रहे थे। अब मैं उन मोटे कंबलोंपर लेट गया जो मुझे पलंगकी जगह मिले थे और यह अनुभव किया कि श्रीकृष्ण, मेरे सखा, मेरे प्रेमास्पद मुझे अपनी बाहुओंमें लिये हुए हैं। मुझे जो गभीरतर दृष्टि उन्होंने दी है उसका यह पहला प्रयोग था। मैंने जेलके कैदियों, वहांके चोरों, हत्यारों और बदमाशोंकी ओर देखा और ज्यों-ज्यों मैं उन्हें देखता गया मुझे वे लोग वासुदेव दिखायी दिये, उन मलिन आत्माओं और अपव्यवहृत शरीरोंमें मुझे नारायण मिले। उन चोरों और डाकुओंमेंसे बहुतोंने अपनी सहानुभूति और दयाके द्वारा मुझे लज्जित कर दिया, इस विपरीत परिस्थितिको भेदकर उनके अंदर मानवता विजयी हुई थी। इनमेंसे एक आदमीको मैंने विशेष रूपसे देखा जो मुझे एक संत मालूम हुआ, जो हमारे देशका एक किसान था और जो लिखना-पढ़ना नहीं जानता था, जिसे डकैतीके अभियोगमें दस वर्षका कठोर दंड मिला था, यह उनमेंका एक व्यक्ति था जिन्हें हम वर्गके मिथ्याभिमानमें आकर "छोटा आदमी" कहा करते हैं। भगवान् मुझसे एक बार फिर बोले और कहा कि "मेरा एक छोटासा काम करनेके लिये मैंने तुम्हें जिन लोगोंके बीच भेजा है उन्हें देखो। जिस जातिको मैं ऊपर उठा रहा हूं उसका स्वरूप यही है और इसी कारण मैं उसे ऊपर उठा रहा हूं।"

नीचेकी अदालतमें जब मुकदमा खुला और हम लोग मजिस्ट्रेटके सामने खड़े किये गये तो यहां भी मेरी अंतर्दृष्टि मेरे साथ थी। मेरे सखा एक बार फिर मुझसे बोले और कहा कि, "जब तुम जेलमें भेजे गये थे तब क्या तुम्हारा हृदय हताश नहीं हुआ था और क्या तुमने मुझे यह कहकर नहीं पुकारा था कि, कहां, तुम्हारी रक्षा कहां है? अच्छा, तो अब मजिस्ट्रेटकी ओर देखो, सरकारी वकीलकी ओर देखो।" मैंने नजर उठाई और देखा कि अदालतकी कुर्सीपर मजिस्ट्रेट नहीं बल्कि वासुदेव, नारायण बैठे थे। अब मैंने सरकारी वकीलकी ओर देखा और यह पाया कि वहां कोई सरकारी वकील नहीं था, वहां तो श्रीकृष्ण, मेरे सखा, मेरे प्रेमास्पद बैठे हुए मुसकरा रहे थे। उन्होंने कहा "क्यों, अब भी तुम डरते हो क्या? मैं घट-घटमें हूं और मनुष्योंके कर्मों और शब्दोंका परिचालन करता रहता हूं। मेरा संरक्षण अभी भी तुम्हारे साथ है और तुम्हें डरना नहीं चाहिये। तुम्हारे विरुद्ध यह जो मुकदमा चलाया गया है उसे तुम मेरे हाथोंमें सौंप दो। यह मुकदमा तुम्हारे लिये नहीं है। मैं तुम्हें यहां जांचके लिये नहीं बल्कि किसी और कामके लिये लाया हूं। यह मुकदमा तो मेरे कर्मका एक साधनमात्र है, इससे अधिक और कुछ नहीं।" इसके बाद जब सेशन जजकी अदालतमें जांच शुरू हुई तो मैं अपने वकीलके लिये बहुतसी हिदायतें लिखने लगा कि गवाहीमें मेरे विरुद्ध गुजरी हुई कौनसी बातें मिथ्या हैं और किन-किन बातोंपर गवाहोंकी जिरह की जा सकती है। तब एक ऐसी घटना घटी जिसकी मैं अपेक्षा नहीं करता था। मेरे बचावके लिये जो प्रबंध किया गया था वह एकाएक बदल गया और मेरी पैरवीके लिये एक दूसरे ही वकील खड़े हुए। वे अप्रत्याशित रूपसे आ गये—मेरे एक मित्र, किंतु मैं नहीं जानता था कि वे खड़े होंगे।

आप सभी लोगोंने उनका नाम सुना होगा जिन्होंने मनसे दूसरे सभी विचारोंको निकाल बाहर किया, इस मुकदमेके सिवाय अपनी सारी वकालत बंद कर दी, महीनों लगातार आधी-आधी राततक जागकर मुझे बचानेके लिये अपने स्वास्थ्यको बिगाड़ डाला—वे हैं श्रीचित्तरंजन दास। मैंने जब उन्हें देखा तो मुझे संतोष हो गया, पर अभी भी मैं समझता था कि हिदायतोंका लिखना जरूरी है। इसके बाद यह विचार जाता रहा और मेरे अंदरसे यह आवाज आयी कि "तुम्हारे पैरोंके आगे जो जाल बिछाया गया है उसमेंसे ये ही तुम्हें निकालेंगे। तुम अपने कागजोंको अलग रख दो। इन्हें हिदायत तुम नहीं बल्कि मैं दूँगा।" उस क्षणके बाद इस मुकदमेके संबंधमें मैंने अपनी ओरसे एक शब्द भी नहीं कहा, कोई हिदायत नहीं दी और यदि कभी मुझसे कोई सवाल पूछा गया तो मैंने सदा ही यह पाया कि मेरे उत्तरसे मुकदमेको कोई मदद नहीं मिलती थी। मैंने मुकदमेको उन्हें सौंप दिया और उन्होंने संपूर्ण रूपसे अपने हाथोंमें ले लिया, परिणाम क्या हुआ यह आप जानते ही हैं। मैं सदा यह जानता था कि मेरे संबंधमें भगवान्‌की इच्छा क्या है, क्योंकि मुझे बार-बार यह सुनायी दिया कि, मैंने सदा अंदरसे यह आवाज सुनी कि, "मैं परिचालन कर रहा हूं, इसलिये डरो मत। मैं तुम्हें जिस कामको करनेके लिये जेलमें लाया हूं अपने उस कामकी ओर मुड़ो और जब जेलसे बाहर निकलो तो इस बातको याद रखना कि भय तो कभी नहीं करना होगा, कभी नहीं हिचकना होगा। यह याद रखो कि यह सब मैं कर रहा हूं, तुम या कोई और व्यक्ति नहीं। अतएव कैसे भी घने बादल घिर आवें, कैसे भी खतरे और कष्ट हों, कैसी भी कठिनाइयां हों, कैसी भी असंभवता दीखे, पर कुछ भी असंभव नहीं होगा, कोई बात कठिन नहीं रहेगी। इस देश और इसके उत्थानके

भीतर मैं हूं और मैं वासुदेव हूं, मैं नारायण हूं, मैं जो इच्छा करता हूं वह अवश्य पूरी होगी न कि वह जो दूसरे-दूसरे लोग चाहते हैं। जिस अवस्थाको मैं लाना चाहता हूं उसे कोई मानव शक्ति नहीं अटका सकती।"

इस बीच वे मुझे उस एकांत कालकोठरीसे बाहर ले आये और मेरे साथ जो अन्यान्य व्यक्ति अभियुक्त हुए थे मुझे उनके बीच लाकर रख दिया। आज आपने मेरे आत्म-त्याग और देश-प्रेमके बारेमें बहुत कुछ कहा है। जबसे मैं जेलसे बाहर आया हूं तबसे मैंने इस प्रकारकी वक्तृता बराबर सुनी है, किंतु इस प्रकारकी बातें सुननेसे मुझे लज्जा होती है, मेरे अंदर एक तरहकी वेदना होती है। क्योंकि मैं अपनी दुर्बलताको जानता हूं, मैं अपने निजी दोषों और धर्मस्खलनोंका शिकार हो जाता हूं। इन बातोंसे मैं पहले भी सचेत था और मेरे एकांतवासमें, जब ये सब-के-सब मेरे विरुद्ध खड़े हुए, तब तो मैंने इनका बुरी तरह अनुभव किया। तब मुझे मालूम हुआ कि, मनुष्यके नाते मैं दुर्बलताका एक पुंज हूं, एक सदोष और अपूर्ण यंत्र हूं, और मुझमें तभी ताकत आती है जब कि कोई उच्चतर शक्ति मेरे अंदर प्रवेश करती है। अब, जब मैं उन युवकोंके बीच आया तो मैंने देखा कि इनमेंसे बहुतोंमें एक प्रचंड साहस, अपनेको मिटा देनेकी एक ऐसी शक्ति है जिसकी तुलनामें मैं कुछ भी नहीं था। इनमेंसे एक या दोको मैंने ऐसा पाया जो केवल बल और चरित्रमें ही मुझसे बढ़कर नहीं थे—ऐसे तो बहुतेरे थे—पर मैं जिस बौद्धिक योग्यताका अभिमान रखता था, उसमें भी वे बढ़े हुए थे। भगवान्‌ने मुझसे फिर कहा "यही वह युवक दल, वह नवीन और बलवान् जाति है जो मेरे आदेशसे ऊपर उठ रही है। ये तुमसे अधिक बड़े हैं। तुम्हें अब भय किस बातका? तुम यदि इस कामसे हट जाओ

या सो जाओ तो भी यह कार्य संपन्न होगा। कल यदि तुम इस कार्यसे हटा लिये जाओ तो यह युवकसमुदाय तुम्हारे कामको उठा लेगा और उसे इतनी शक्तिशालिताके साथ करेगा जिसके साथ तुमने कभी नहीं किया होगा। तुमने इस देशको एक वाणी सुनानेके लिये मुझसे कुछ शक्ति पायी है और यह वाणी इस जातिको ऊपर उठानेमें सहायक होगी।" यह वह दूसरी बात थी जिसे भगवान्‌ने मुझसे कहा।

इसके बाद अकस्मात् एक घटना घटी और क्षणाभरमें मुझे एक कालकोठरीके एकांतवासमें जल्दी-जल्दी पहुंचा दिया गया। इस एकांतवासमें मेरे अंदर क्या गुजरा उसे कहनेकी प्रवृत्ति नहीं हो रही है, केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि वहां दिन-पर-दिन भगवान्‌ने अपने चमत्कार दिखाये और मुझे हिंदूधर्मके वास्तविक सत्यका दर्शन करा दिया। पहले मेरे अंदर अनेक प्रकारके संदेह घुसे पड़े थे। मेरा लालन-पालन विलायतमें विदेशी भावों और सर्वथा विदेशी वातावरणके बीच हुआ है। हिंदूधर्मकी बहुतसी बातोंको एक दिन मैं मात्र कल्पना समझने लगा था, यह समझने लगा था कि इसका बहुत कुछ केवल स्वप्न, भ्रम या माया है। परंतु अब दिन-पर-दिन मैंने हिंदूधर्मके सत्यको, अपने मन, प्राण और शरीरमें अनुभव किया है। वे मेरे लिये जीवंत अनुभव हो गये हैं और मेरे सामने ऐसी वस्तुओंका उद्घाटन हुआ है जिनके बारेमें जड़विज्ञान कोई खुलासा नहीं दे सकता। भगवान्‌के समीप जब मैं पहले-पहल गया था तो सर्वथा भक्तिभावको लेकर नहीं गया था, सर्वथा ज्ञानीके भावसे भी नहीं गया था। बहुत दिन हुए मैं उनके पास पहले-पहल बड़ोदामें रहते हुए गया था, यह स्वदेशी आंदोलन और मेरे सार्वजनिक क्षेत्रमें खिंच आनेके कुछ वर्ष पहलेकी बात है।

बड़ोदामें रहते हुए जब मुझे भगवान्‌का सामीप्य हुआ था,

तब उनमें मेरा जीवंत विश्वास नहीं था। उस समय मेरे अंदर अज्ञेयवादीका भाव था, नास्तिकका भाव था, संदेहवादीका भाव था और भगवान् हैं ही इस विषयमें मैं संपूर्ण रूपसे निश्चित नहीं था। मैं उनकी उपस्थितिका अनुभव नहीं करता था। फिर भी कोई चीज थी जिसने मुझे वेदके सत्यके प्रति, गीताके सत्यके प्रति हिंदूधर्मके सत्यके प्रति आकर्षित किया। मैंने यह अनुभव किया कि इस योगमें कहींपर कोई महाप्रतापी सत्य है, वेदांतपर प्रतिष्ठित इस धर्ममें कोई परम प्रतापी सत्य है। इसलिये मैं जब योगकी ओर मुड़ा और योगाभ्यास करने और अपनी धारणाकी सत्यताको जाननेके लिये संकल्प किया तो मैंने उसे इस भाव और इस प्रार्थनासे आरंभ किया। मैंने कहा "हे भगवान्, यदि तुम हो तो तुम मेरे अंतःकरणको जानते हो। तुम जानते हो कि मैं मुक्ति नहीं मांगता, मैं ऐसी कोई चीज नहीं मांगता जिसे दूसरे-दूसरे लोग मांगा करते हैं। मैं तो केवल यह मांगता हूं कि इस जातिके लोगोंको जिन्हें मैं प्यार करता हूं, उनके लिये जीने और कर्म करनेकी मुझे आज्ञा हो और यह प्रार्थना करता हूं कि उनके प्रति मैं अपने जीवनको उत्सर्ग कर सकूं।" मैंने योगसिद्धि लाभ करनेके लिये बहुत दिनोंतक प्रयास किया और अंतमें किसी हदतक वह मुझे मिली भी, पर जिस बातके लिये मेरी अत्यधिक इच्छा थी उसके संबंधमें मैं संतुष्ट नहीं हुआ। तब उस जेलके, उस काल-कोठरीके एकांतवासमें मैंने उसके लिये फिर प्रार्थना की। मैंने कहा "मुझे तुम्हारा आदेश दो, मैं नहीं जानता कि कौनसा काम करूं और उसे कैसे करूं। मुझे एक संदेश दो।" इस योगयुक्त अवस्थामें मुझे दो संदेश मिले। पहला यह था। "मैंने तुम्हारे जिम्मे एक काम सौंपा है और वह है इस जातिके उत्थानमें सहायक होना। शीघ्र ही वह समय आवेगा जब तुम्हें जेलके बाहर जाना

होगा ; क्योंकि मैं नहीं चाहता कि इस बार या तो तुम्हें सजा हो या तुम अपना समय, और-और लोग जिस प्रकार अपने देशके लिये कष्ट सहन करते हुए बिताते हैं, वैसे बिताओ। मैंने तुम्हें कर्म करनेके लिये बुलाया है और यही वह आदेश है जिसकी तुमने प्रार्थना की है। मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि जाओ और मेरा काम करो।" दूसरा संदेश इस प्रकार था। "इस एक वर्षके एकांत-वासमें तुम्हें बहुत कुछ दिखा दिया गया है, वह चीज दिखा दी गयी है जिसके बारेमें तुम्हें संदेह था और वह है हिंदूधर्मका सत्य। इसी धर्मको मैं संसारके सामने उपस्थित कर रहा हूं, यही वह धर्म है जिसे मैंने ऋषि, मुनि और अवतारोंके द्वारा विकसित तथा परिपूरित किया है और अब यह धर्म अन्यान्य जातियोंमें मेरा काम करनेके लिये अग्रसर होने जा रहा है। मैं अपनी वाणीका प्रचार करनेके लिये इस जातिको उठा रहा हूं। यही वह सनातन-धर्म है जिसे तुम पहले ठीक-ठीक नहीं जानते थे, किंतु अब मैंने उसे तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है। तुम्हारे अंदर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था उनका उत्तर दे दिया गया है, क्योंकि मैंने आंतर और बाह्य, स्थूल और सूक्ष्म, सभी प्रमाण दे दिये हैं और उनसे तुम्हारी परितृप्ति हो गयी है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा अपनी जातिको इस वाणीको सुनाना कि वे सनातनधर्म-के लिये ही उठ रहे हैं, वे अपने लिये नहीं प्रत्युत संसारके लिये उठ रहे हैं। मैं उन्हें संसारकी सेवाके लिये स्वतंत्र कर रहा हूं। अस्तु! जब यह कहा जाता है कि भारतवर्ष ऊपर उठेगा तो उसका अर्थ होता है सनातनधर्म ऊपर उठेगा। जब यह कहा जाता है कि भारतवर्ष महान् होगा तो उसका अर्थ होता है सना-तनधर्म महान् होगा। जब यह कहा जाता है कि भारतवर्ष अपने हाथ-पांव फैलायगा तो उसका अर्थ होता है सनातनधर्म

संसारपर छायगा। धर्मके लिये और धर्मके द्वारा ही भारतका अस्तित्व है। धर्मकी महिमा बढ़ानेका अर्थ है देशकी महिमा बढ़ाना। मैंने तुमको यह दिखा दिया है कि मैं सर्वत्र हूं, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओंमें हूं, मैं इस आंदोलनमें हूं और मैं केवल उन्हींके अंदर कार्य नहीं करता जो देशके लिये उद्योग कर रहे हैं बल्कि उनके अंदर भी क्रिया करता हूं जो उनका विरोध करते और उनके मार्गमें रोड़े अटकाते हैं। मैं प्रत्येक व्यक्तिके अंदर काम करता रहता हूं और मनुष्य चाहे जो सोचें या करें पर वे मेरे हेतुकी सहायता करनेके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकते। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं; वे मेरे शत्रु नहीं बल्कि मेरे यंत्र हैं। तुम इस बातको नहीं जानते हुए भी कि तुम किस ओर चल रहे हो, अपनी क्रियाओंमें तुम चलते हो मेरी ही ओर। तुम करना चाहते हो कुछ और, कर बैठते हो कुछ और। तुम एक परिणामको लक्ष्य बनाते हो, पर तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं जो भिन्न या विपरीत परिणामको लानेवाले हों। शक्तिका आविर्भाव हुआ है और लोगोंमें उनका प्रवेश हुआ है। इस उत्थान-की तैयारी मैं बहुत दिनोंसे कर रहा था, पर अब वह समय आ गया है, अब मैं इसे पूर्णताकी ओर ले चलूंगा।"

यही वह वाणी है जिसे मुझे आपको सुनाना है। आपकी सभाका नाम है "धर्मरक्षिणी सभा"। अस्तु धर्मका संरक्षण, हिंदूधर्मका संरक्षण और अभ्युत्थान—यही वह कर्म है जो हमारे सम्मुख है। परंतु हिंदूधर्म क्या है? जिसे हम सनातनधर्म कहते हैं वह क्या है? वह धर्म केवल हिंदूधर्म ही है, इस कारणसे कि हिंदूजातिने ही इस धर्मको रखा है, इस कारणसे कि समुद्र और हिमालयसे घिरे हुए इस प्रायद्वीपके एकांतवासमें यह फला-फूला है और इस पवित्र और प्राचीन भूमिपर इसकी युग-युगमें रक्षा करने-

का भार आर्यजातिको सौंपा गया था। परंतु यह धर्म किसी एक देशकी सीमाके अंदर घिरा हुआ नहीं है, यह संसारके किसी सीमित भागके साथ सदाके लिये विशेष रूपसे बंधा हुआ नहीं है। जिसे हम हिंदूधर्म कहते हैं वास्तवमें वही सनातनधर्म है क्योंकि यही वह विश्वव्यापी धर्म है जो दूसरे सभी धर्मोंका आलिंगन करता है। यदि कोई धर्म विश्वव्यापी न हो तो वह सनातनधर्म नहीं हो सकता। कोई संकीर्ण धर्म, सांप्रदायिक धर्म, अनुदार धर्म किसी मर्यादित काल और किसी मर्यादित हेतुके लिये ही रह सकता है। यही एक धर्म ऐसा है जो अपने अंदर सांयसके आविष्कारों और दर्शनशास्त्रकी चिंतनधाराओंका समावेश करने और उनका पूर्वाभास रखनेके द्वारा जड़वादपर विजय लाभ कर सकता है। यही एक धर्म ऐसा है जो मानव-जातिके दिलमें इस बातको बैठा देता है कि भगवान् हमारे कितने निकट हैं और जो अपनी दूर-दृष्टिमें उन सभी साधनोंका आलिंगन करता है जिनके द्वारा मनुष्य भगवान्‌के समीप पहुंच सकते हैं। यही एक धर्म ऐसा है जो प्रत्येक क्षण, सभी धर्मोंके द्वारा स्वीकृत इस सत्यपर जोर देता है कि भगवान् प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक वस्तुमें हैं तथा हम उन्हींमें चलते-फिरते हैं और हमारी सत्ता उनकी सत्ताके साथ एक है। यही एक धर्म ऐसा है जो केवल इस सत्यको समझने और उसपर विश्वास करनेमें ही हमारा सहायक नहीं होता बल्कि अपनी सत्ताके अंग-अंगमें इसका अनुभव करनेमें भी हमारी मदद करता है। यही एक धर्म ऐसा है जो संसारको उसका असली रूप दिखा देता और यह कहता है कि यह संसार वासुदेवकी लीला है। यही एक धर्म ऐसा है जो हमें यह दिखा देता है कि इस लीलामें हम अपनी भूमिकाको अच्छी-से-अच्छी तरह किस प्रकार खेल सकते हैं, जो हमें यह दिखा देता है कि इसके सूक्ष्म-से-

सूक्ष्म नियम क्या हैं, इसके महान्‌-से-महान्‌ विधान क्या हैं। यही एक धर्म ऐसा है जो जीवनकी छोटी-से-छोटी बातको भी धर्मसे पृथक्‌ नहीं करता, जो यह जानता है कि अमृतत्व क्या वस्तु है और जिसने हममेंसे मृत्युकी वास्तविकताको सर्वथा अलग कर दिया है।

यही वह वाणी है जो आपको आज सुनानेके लिये मेरे मुंहमें रख दी गयी थी। मैं जो कुछ कहना चाहता था वह तो मुझमेंसे निकाल लिया गया और जो कुछ मुझे कहनेके लिये दिया गया उससे अधिक अब मुझे कुछ नहीं कहना है। जो वाणी मेरे अंदर भरी गयी केवल उसे ही मैं आपको सुना सकता हूं। वह वाणी अब समाप्त हो चुकी है। पहले भी मैंने एक बार आपसे कहा था, और उस समय भी मेरे अंदर यही शक्ति काम कर रही थी, मैंने कहा था कि यह आंदोलन कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं है और यह कहा था कि राष्ट्रीयता राजनीति नहीं है बल्कि एक धर्म है, एक विश्वास है, एक निष्ठा है। उसी बातको आज मैं फिर दोहराता हूं, किंतु आज मैं उसे दूसरे ही रूपमें उपस्थित करता हूं। आज मैं यह नहीं कहता कि राष्ट्रीयता एक विश्वास है, एक धर्म है, एक निष्ठा है बल्कि आज मैं यह कहता हूं कि सनातनधर्म ही हमारे लिये राष्ट्रीयता है। हिंदूजाति सनातन-धर्मको लेकर ही पैदा हुई, उसीको लेकर यह चलती-फिरती है और उसीको लेकर यह पनपती है। जब सनातनधर्मकी हानि होती है तब जातिकी अवनति होती है और यदि सनातनधर्मका विनाश संभव हो तो सनातनधर्मके साथ-साथ इस जातिका भी विनाश होता जायगा। सनातनधर्म ही है राष्ट्रीयता। यही वह संदेश है जिसे मुझे आपको सुनाना था।

अन्यान्य पुस्तकें



श्रीअरविंद और उनका योग	....	मूल्य	॥)
योगप्रदीप	....	,,	॥)
इस जगत्‌की पहेली	....	,,	॥=)
माता	....	,,	॥)
योगके आधार	....	,,	२)
हमारा योग और उसके उद्देश्य	....	,,	॥)
गीता-प्रबंध (प्रथम भाग)	....	,,	४)
जगन्नाथका रथ	....	,,	॥)

प्रेसमें :—

मातृवाणी	....	,,	२)

श्रीअरविंद-ग्रंथमाला

१६, रयू देवासैं द रिश्मों

16, Rue desbassin de Richemont

पांडीचेरी PONDICHERRY.

प्राप्ति स्थान :—

१. श्रीअरविंदाश्रम, पांडीचेरी

२. अदिति कार्यालय, ठि. पोस्ट बक्स नं० ८५ नयी दिल्ली

३. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
त्यागरायनगर, मद्रास

४. श्रीअरविंद लायब्रेरी,
२, आदिअप्पा मुदली लेन, वेपेरी, मद्रास

५. गुरुकुल विश्वविद्यालय (पुस्तक-विभाग)
पो. गुरुकुल-कांगडी, जि. सहारनपूर

६. गीता प्रचार कार्यालय,
१०८-११ मनोहर पूकुर रोड, कालीघाट, कलकत्ता

७. आर्य पब्लिशिंग हाउस,
६३ कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता

८. डा० आर० एस० अग्रवाल,
१५, दरियागंज, दिल्ली

९. श्रीअरविंद, कार्यालय, आनंद (गुजरात)

१०. रामनारायण पोद्दार, पोद्दार ब्रदर्स, करीम चेम्बर्स,
हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट, बंबई ।